संभावनाओं से भरपूर मत्स्य पालन क्षेत्र

इसमें कोई संदेह नहीं है कि मत्स्य पालन का देश के सामाजिक–आर्थिक विकास में बेहद महत्वपूर्ण स्थान है। भारत दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक देश है। भारत एक्वाक्लचर के जरिए भी मछली उत्पादन करने वाला एक बड़ा देश है और चीन के बाद दुनिया में इसका दूसरा स्थान है। मत्स्यपालन भोजन की आपूर्ति बढ़ाने, पोषाहार का स्तर उठाने, रोजगार उत्पन्न करने और विदेशी मुद्रा कमाने का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। साथ ही, मत्स्य को भविष्य के खाद्यान्न के प्रमुख विकल्प के रूप में देखा जा रहा है।

मछली उत्पादन में भारत, विश्व में चीन के बाद लगातार दूसरे स्थान पर बना हुआ है। देश में मात्स्यिकी एक बड़ा क्षेत्र है और लगभग 150 लाख लोग मत्स्य व्यवसाय से जुड़े हुए हैं। झींगा मछली में भारत विश्व में प्रथम स्थान पर है और यह झींगा का सबसे बड़ा निर्यातक है। अंतर्देशीय फिशरीज में 72.1 लाख टन मछली उत्पादन कर भारत विश्व में दूसरे स्थान पर है। और लगभग 8 प्रतिशत की विकास दर हासिल कर सकता है। सभी मत्स्य उत्पादन मिलाकर, वर्ष 2015–16 में देश में अनुमानित 1.08 करोड़ टन मछली उत्पादन हुआ, जोकि विश्व के कुल मछली उत्पादन का लगभग 6.4 प्रतिशत है। भारत जल कृषि से मछली उत्पादन करने वाला दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक (42.10 लाख टन) देश है। वैश्विक जलकृषि उत्पादन में यह लगभग 6.3 प्रतिशत का योगदान करता है। पिछले एक दशक में जहां विश्व में मछली एवं मत्स्य–उत्पादों के निर्यात की औसत वार्षिक विकास दर 7.5 प्रतिशत रही, वही भारत मत्स्य उत्पादों के निर्यात में 14.8 प्रतिशत की औसत वार्षिक विकास दर के साथ विश्व में प्रथम स्थान पर रहा।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भारत के समस्त विकास का नारा तथा विजन दिया है– किसानों की आय को दुगुना करना। यह लक्ष्य हासिल करने के लिए सरकार ने मत्स्य विकास पर जोर दिया है और एक्वाकल्चर तथा समुद्री फिशरीज द्वारा मत्स्य पालकों तथा मछुआरों, किसानों की आय वर्ष 2022 तक दो गुना करने का लक्ष्य रखा है।

देश में मात्स्यिकी और जल कृषि में हुई तेज प्रगति से मछली–पालकों और किसानों की आमदनी लगातार बढ़ रही है और आने वाले दिनों में यह बड़े पैमाने पर इन्हें आर्थिक लाभ पहुंचाएगा। वर्ष 2015–16 के अनुमान के अनुसार लगभग एक लाख करोड़ का मत्स्य उत्पादन देश में हुआ है।

भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में मछली पालन से तीन फायदे हैं– पहला, मत्स्य किसानों की आय में बढ़ोतरी, दूसरा, देश के निर्यात तथा जीडीपी में अधिक प्रगति, तथा तीसरा, देश में पोषण तथा खाद्य सुरक्षा की सुनिश्चितता।

मत्स्य क्षेत्र देश के सामाजिक–आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान करता है। इसकी पहचान आज एक महत्वपूर्ण आय और रोजगार उत्पन्न करने वाले क्षेत्र के रूप में की जाती है। यह क्षेत्र देश की आर्थिक रूप में कमजोर जनसंख्या, खासकर तटीय क्षेत्रों के लिए आजीविका का महत्वपूर्ण साधन है। मत्स्यपालन भोजन की आपूर्ति बढ़ाने, पोषाहार का स्तर उठाने, रोजगार उत्पन्न करने और विदेशी मुद्रा कमाने का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

हमारे देश में भू–क्षेत्रफल का एक बड़ा हिस्सा ऐसा है जो नदियों, समुद्र व अन्य जलस्रोतों से ढका हुआ है जिसका उपयोग फसलोत्पादन के लिए नहीं किया जा सकता। वहां मत्स्य पालन को बढ़ावा देकर अच्छी आय प्राप्त की जा सकती है।

भारतीय महाद्वीप में आज कार्प मछलियों की मिश्रित खेती, टाइगर झींगा के एकल पालन व समन्वित मछली पालन की जड़ें काफी मजबूत हुई हैं। सीबास, वायुश्वासी मछलियों तथा महाझींगा के पालन में भी काफी उन्नति हुई है।

मत्स्य पालन भारत में कृषि और संबंधित गतिविधियों के सबसे

नीली क्रांति : नई पहल

हमारे देश में समुद्री, अंतर्देशीय, शीतजल मात्स्यिकी तथा बाढ़मैदान आर्द्र भूमियों जैसे व्यापक जल संसाधन हैं। समुद्री तटरेखा की लंबाई 8118 किलोमीटर है तथा अन्य आर्थिक क्षेत्र 20.2 लाख वर्ग किलोमीटर लंबा है। इसमें अनुमानित 44.10 लाख टन मछली उत्पादन की क्षमता है।

अंतर्देशीय नदियों तथा नहरों की लम्बाई 1.9 लाख किलोमीटर है, जबकि जलाशय क्षेत्रफल 29.3 लाख हेक्टेयर है तथा खारा जल क्षेत्रफल 11.6 लाख हेक्टेयर है। शीतजल मात्स्यिकी के अंतर्गत नदियां 8265 किलोमीटर, प्राकृतिक झीलें 21900 हेक्टेयर के क्षेत्र को आच्छादित करती हैं। बाढ़मैदान आर्द्र भूमि का क्षेत्रफल 5.5 लाख हेक्टेयर है।

घरेलू मांग को पूरा करने के अलावा, 1.45 करोड़ लोगों की अपनी आजीविका हेतु मात्स्यिकी क्षेत्र पर निर्भरता तथा मछली और मत्स्य उत्पादों से होने वाले 5 बिलियन अमेरिकी डालर (2013–14) से अधिक का मुद्रा अर्जन, देश की अर्थव्यवस्था तथा आजीविका के लिए इस क्षेत्र की महत्ता को न्यायसंगत बनाता है। जल संसाधन व्यापक तथा भिन्न–भिन्न हैं, इनमें अपार क्षमता हैं, जिसका दोहन नहीं किया गया है तथा जो पौष्टिक आहार आजीविका में सुधार करने के साथ–साथ महिला सशक्तीकरण में भी सार्थक योगदान दे सकता हैं।

केंद्र की नई सरकार ने मात्स्यिकी क्षेत्र को आगे ले जाने के लिए नीली क्रांति प्रारंभ की है। इससे मछुआरों, महिला मछुआरों तथा जल कृषि किसानों की आजीविका में सुधार होगा और इसके अलावा कुपोषण से निपटने के लिए अधिक ऊर्जा वाले प्रोटीन प्रदान करने, ओमेगा–3 तेल अनुपूरण के साथ पैकेजिंग, ढुलाई, बर्फ उत्पादन, प्रसंस्करण इत्यादि जैसे संबंधित उद्योगों के माध्यम से ग्रामीण रोजगार का सृजन होगा।

मात्स्यिकी में विकास की सम्भावनाओं को देखते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने मात्स्यिकी क्षेत्र में "नीली क्रांति" का आह्वान किया था। इसके बाद मंत्रालय ने मौजूदा सभी योजनाओं को एक में विलय कर 3000 करोड़ रुपये की एकछत्र योजना 'नीली क्रांति मात्स्यिकी के एकीकृत विकास और प्रबंधन' की शुरुआत की। इस योजना में अंतर्देशीय मात्स्यिकी, जलकृषि, समुद्री मात्स्यिकी समेत गहन समुद्री मत्स्यन, समुद्री मछली पालन और राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड (एनएफडीबी) के सभी क्रियाकलाप शामिल हैं।

पशुपालन, डेयरी और मत्स्यपालन विभाग ने मछली उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि और नीली क्रांति का लक्ष्य हासिल करने के लिए अगले 5 वर्षों के लिए एक राष्ट्रीय मात्स्यिकी कार्ययोजना 2020 बनायी है। इस कार्ययोजना में देश में मौजूद विभिन्न मात्स्यिकी संसाधनों जैसे तालाबों तथा टैंको, आर्द्रभूमियों, खारा जल, शीतजल, झील और जलाशय, नदियां तथा नहरें और समुद्री सेक्टर को शामिल किया गया है। सभी राज्यों तथा संघ राज्य क्षेत्रों को अपने राज्यों/संघ राज्य क्षेत्र में नीली क्रांति के लक्ष्यों को हासिल करने के लिए अगले 5 वर्षों के लिए 'राज्य कार्ययोजना' तैयार करने के लिए कहा गया है। नीली क्रांति योजना द्वारा मछली की उत्पादकता और उत्पादन लगभग 8 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि–दर के साथ सन 2020 तक 1.5 करोड़ टन पहुंचाने का लक्ष्य है। नई 'राष्ट्रीय समुद्री मात्स्यिकी नीति' के साथ एक 'राष्ट्रीय अंतःस्थलीय मात्स्यिकी नीति' लाने का प्रयास किया जा रहा है जो अंतर्देशीय फिशरीज़ के क्षेत्र में पूरे देश मे एक समग्र एवं समेकित विकास की रूपरेखा तय करेगी।

जलकृषि के लिए लगभग 26,869 हेक्टेयर क्षेत्रफल विकसित किया गया है, जिससे 63,372 मछुआरों को लाभ हुआ है। मछुआरा–कल्याण के अंतर्गत पिछले दो वर्षों के दौरान, 9,603 मछुआरा आवासों के निर्माण के लिए सहायता दी गई है जबकि 20,705 मछुआरों को प्रशिक्षण दिया गया है तथा लगभग 50 लाख मछुआरों को वार्षिक बीमा सहायता दी गई है।

भारत के पास ऐसे व्यापक जलीय संसाधन मौजूद हैं जिनमें सतत उपयोग के लिए विविध जीवों का भंडार है। हमारे देश में मछलियों की 2200 प्रजातियां हैं जोकि विश्व स्तर पर उपलब्ध प्रजातियों की 11 प्रतिशत हैं। इन प्रजातियों में 24.7 प्रतिशत गर्म मीठे पानी में, 3.3 प्रतिशत ठंडे पानी में, 6.5 प्रतिशत नदी के मुहाने पर और बाकी 65.5 प्रतिशत समुद्र में पाई जाती हैं।

संभावनापूर्ण क्षेत्रों में से एक है। 12वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान इस क्षेत्र में समग्र विकास दर 6 प्रतिशत रही। वर्ष 2013–14 के दौरान 30,213.26 करोड़ रुपये मूल्य का 9.80 लाख टन निर्यात किया गया। केंद्रीय सांख्यिकी संगठन के अनुसार वर्ष 2013–14 के दौरान वर्तमान कीमत पर मत्स्य पालन क्षेत्र से सकल मूल्य संवर्धन (जीपीए) 96,824 करोड़ रुपये था जोकि कृषि से प्राप्त जीपीए का 5.58 प्रतिशत और कुल जीपीए का 0.92 प्रतिशत था।

मत्स्य क्षेत्र विकास हेतु चालू योजनाएं

- अंतर्देशीय मत्स्य पालन और एक्वाकल्चर का विकास;
- समुद्री मत्स्य, बुनियादी ढांचा और फसल उपरांत (पोस्ट हार्वेस्ट, ऑपरेशन) संचालन का विकास;
- मछुआरों के कल्याण की राष्ट्रीय योजना;
- मत्स्य पालन क्षेत्र के लिए डाटाबेस और भौगोलिक सूचना प्रणाली का सुदृढ़ीकरण;
- मत्स्य संस्थानों के लिए सहायता;
- राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड (एनएफडीबी) और
- तटीय मछुआरों को बायोमैट्रिक पहचान–पत्र जारी करना।

नीली क्रांति और रोजगार

मछली उत्पादन के क्षेत्र में हुई प्रगति को नीली क्रांति के रूप में जाना जाता है। देश में मत्स्य फार्म विकास अभिकरणों के अन्तर्गत दी गई सक्रिय सहायता के माध्यम से 3.86 लाख हेक्टेयर क्षेत्र को वैज्ञानिक मत्स्य उत्पादन के अन्तर्गत लाया गया है, तथा 5.04 लाख कृषकों को उन्नत पद्धति में प्रशिक्षित किया गया है। झींगा मत्स्य पालन के तकनीकी, वित्तीय एवं विस्तार सहायता पैकेज तटीय राज्यों में प्रदान करने हेतु मत्स्य कृषि विकास अभिकरणों द्वारा खारे पानी में एक्वाकल्चर का विकास किया गया है। विश्व बैंक की सहायता से 5 राज्यों में एक झींगा एवं मत्स्य उत्पादन परियोजना क्रियान्वित की जा रही है।

इस उद्योग पर आधारित अन्य सहायक उद्योगों में जाल निर्माण उद्योग, नाव निर्माण उद्योग, नायलोन निर्माण, तार का रस्सा उद्योग आदि शामिल हैं। यह उद्योग बेरोजगारी दूर करने में सहायक है। ग्रामीण क्षेत्रों में मत्स्य पालन जैसे महत्वपूर्ण उद्योगों को प्रोत्साहन देना होगा। मत्स्य पालन शुरू करने के पहले मत्स्यपालकों को उन्नत तकनीकी की जानकारी तथा प्रशिक्षण देना होगा। अगर मत्स्य पालन उन्नत तकनीकी से किया जाएगा तो निश्चित रूप से मत्स्यपालकों की आय में वृद्धि होगी और उनका सामाजिक–स्तर सुधरेगा।

भारत में विगत् कई वर्षों से समन्वित मत्स्य पालन भी किया जाने लगा हैं। समन्वित मत्स्य पालन में मछलियों के साथ अन्य पालन जैसे मछली–सह–कुक्कुट पालन, मछली –सह–बत्तखपालन, मछली–सह–सूकर पालन, मछली–सह–पेड़–पौधों का समन्वय (इसमें फल शहतूत, सब्जी, गन्ना, धान व बांस आदि आते हैं) मछली–सह–फल तरकारी उत्पादन आदि किए जाते हैं। अब मछलियों के साथ झींगा व अन्य प्रजातियों का भी पालन किया जाने लगा है। इस दौरान बाड़ों और पिंजड़ों में भी मत्स्य पालन तकनीकी की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

दूध, घी की की कमी के कारण हमारे भोजन में मछली की विशेष उपयोगिता है। मीठे पानी की मछली में वसा बहुत कम होती है और इसकी प्रोटीन शीघ्र पचने वाली होती है। आधुनिक शोधों ने यह सिद्ध किया है कि अन्य प्रकार का मांस खाने वालों की अपेक्षा मछली खाने वालों को दिल की बीमारी कम होती है क्योंकि यह खून में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को कम करती है। मछली में 14–25 प्रतिशत प्रोटीन के अतिरिक्त कार्बोहाइड्रेड, खनिज, लवण, कैल्शियम, फासफोरस, लोहा आदि तत्व भी होते हैं।

मछली पालन में मुख्य रूप से 6 प्रकार की मछलियां पाली जाती हैं यथा– भारतीय मेजर कार्प में रोहू, कतला, मृगल (नैन) एवं विदेशी मेजर कार्प में सिल्वर कार्प, ग्रास कार्प तथा कामन कार्प मुख्य हैं।

मछलियों में मुख्यतः फफूंद, जीवाणुओं, प्रोटोजोआ परजीवियों, कृमियों, हिरुडिनिया आदि द्वारा बीमारी उत्पन्न होती हैं जिसके निदान हेतु अपने जनपदीय कार्यालय में सम्पर्क कर अधिकारियों/कर्मचारियों से तकनीकी जानकारी प्राप्त कर उसका उपचार करना चाहिए। मछली पालन हेतु मिट्टी एवं पानी की जांच होती है जिसके लिए मत्स्यपालक अपने जनपद के मत्स्यपालक विकास अभिकरण के कार्यालय में मिट्टी एवं पानी के नमूने उपलब्ध कराकर मिट्टी, पानी की निःशुल्क जांच करा सकते हैं ताकि जांच के आधार पर अधिकारी/कर्मचारी से तकनीकी सलाह प्राप्त कर सकते हैं।

मत्स्य पालन हेतु मत्स्य बीज संचय दो प्रकार किया जाता है। यदि केवल भारतीय मेजर कार्प का संचय किया जाना हो तो कतला 40 प्रतिशत, रोहू 30 प्रतिशत एवं नैन 30 प्रतिशत के अनुपात में तथा यदि भारतीय मेजर कार्प के साथ विदेशी कार्प मछलियों का संचय किया जाना हो तो कतला 30 प्रतिशत, रोहू 30 प्रतिशत, नैन 20 प्रतिशत एवं विदेशी कार्प 20 प्रतिशत का अनुपात रखा जाता है। मौजूदा तालाबों में मत्स्य पालन करने से पूर्व अवांछनीय वनस्पति एवं मछलियों की निकासी आवश्यक है। चिकनी मिट्टी वाली भूमि के तालाब में मत्स्य पालन सर्वथा उपयुक्त होता है। इस मिट्टी में जलधारण क्षमता अधिक होती है।

तालाब की सफाई संचय के पूर्व अप्रैल या मई माह में करनी चाहिए। तालाब की सफाई हेतु ट्रैक्टर से अच्छी तरह जुताई करके चूना या गोबर की खाद डालने के 15 दिन बाद पानी भरकर तथा उसके 15 दिन बाद मत्स्य संचय करना चाहिए। तालाब से पानी की निकासी बरसात में गंदा पानी या सीवर का पानी आ जाने पर अथवा मछलियों के रोग ग्रसित होने पर की जानी चाहिए। यदि तालाब में मछली मर जाय तो उसे जला देना चाहिए अथवा जमीन में गाड़ देना चाहिए। ऐसी मछली को बाजार में विक्रय हेतु कभी नहीं ले जाना चाहिए। ❑